प्रसार साहित्य : एफ.पी.ए.आर.पी.-8

गन्ने की पेड़ी में पताई बिछाकर सिंचाई जल की बचत करें

डी. वी. यादव, आर. पी. वर्मा, कामता प्रसाद,
ए. के. साह, राजेन्द्र गुप्ता एवं के. पी. सिंह

भाकृअनुप
ICAR

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान
रायबरेली रोड, पोस्ट - दिलकुशा,
लखनऊ - 226 002, उत्तर प्रदेश

अधिकतर किसान गन्ने की सूखी पत्तियों को या तो खेतों में जला देते हैं अथवा दूसरे उपयोग जैसे छप्पर बनाने व ईंधन के रूप में प्रयोग करते हैं। जलाने से जो गर्मी निकलती है उससे मिट्टी में रहने वाले लाभदायक सूक्ष्म जीव मर जाते हैं साथ ही पत्तियों में पाये जाने वाले पोषक तत्व भी नष्ट हो जाते हैं। यदि इन सूखी पत्तियों की एक पतली परत (8-10 सेंटीमीटर मोटी) खेतों में बिछा दी जाए तो मिट्टी की सतह से पानी का वाष्पीकरण कम होता है जिससे सिंचाई जल की बचत होती है। जब यह पत्तियाँ खेतों में सड़ती हैं तो मिट्टी में कार्बनिक पदार्थ और पोषक तत्वों की बढ़ोत्तरी होती है। इस प्रकार गन्ने की पैदावार बढ़ती है और मिट्टी के स्वास्थ्य में भी सुधार होता है।

कार्य विधि

- गन्ने की कटाई के पश्चात् सूखी पत्तियों को खेत के दोनों किनारों पर इकट्ठा कर लें।
- यदि खेतों में ठूँठ हों तो उनकी छँटाई करें।
- गन्ने की कटाई व ठूँठों की छँटाई के पश्चात् सिंचाई कर दें।
- गन्ने की पुरानी जड़ों की छँटाई करने के लिए देशी हल या पेड़ी प्रबन्धन मशीन से जुताई अथवा कुदाली से गुड़ाई करें।
- गन्ने की पंक्तियों में यदि रिक्त स्थान हों तो पहले से अंकुरित गन्ना पौध की खाली स्थानों में रोपाई कर दें।

- गन्ने की पंक्तियों के किनारे-किनारे 140 किलोग्राम यूरिया, 130 किलोग्राम डी.ए.पी. और 100 किलोग्राम म्यूरेट ऑफ पोटाश प्रति हेक्टेयर की दर से डाल दें।
- गन्ने की एकान्तर पंक्तियों के बीच की खाली जगह में सूखी पत्तियों की 8-10 सेंटीमीटर मोटी परत बिछा दें।

- पाँच लीटर क्लोरपायरीफॉस 20 ई.सी. को 1500-1600 लीटर पानी में मिला कर घोल तैयार कर लें।
- उपरोक्त बने घोल को स्प्रेयर अथवा हजारें की मदद से बिछाई गई सूखी पत्तियों पर छिड़क दें जिससे कि गन्ने को दीमक और सैनिक कीट से बचाया जा सके।
- पेड़ी की शुरूआत करने से एक माह बाद प्रथम किल्ले निकलने की अवस्था में दूसरी सिंचाई करें।
- सिंचाई करने के बाद खेत में उचित ओट आ जाने पर 100 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से डाल दें।
- दूसरी सिंचाई के एक माह बाद तीसरी सिंचाई कर दें।
- पंक्तियों के बीच के रिक्त स्थान पर जहाँ सूखी पत्तियाँ नहीं बिछाई गई हैं वहाँ आवश्यकतानुसार निराई-गुड़ाई करते रहें।
- तीसरी सिंचाई के 20-22 दिन बाद चौथी सिंचाई कर दें।
- जून माह के मध्य में 100 किलोग्राम यूरिया प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की पंक्तियों के किनारे-किनारे डाल दें और गुड़ाई कर मृदा में मिला दें।
- गन्ने की फसल को चोटी बेधक कीट से बचाने के लिए जून माह के अन्तिम सप्ताह में 33 किलोग्राम फ्यूराडॉन 3 जी प्रति हेक्टेयर की दर से गन्ने की पंक्तियों के किनारे-किनारे डालें।
- वर्षा ऋतु आने से पहले गन्ना थानों में मिट्टी चढ़ाएँ।
- अगस्त माह के प्रथम पखवाड़ा में नीचे की सूखी पत्तियों से

प्रत्येक थान के गन्नों को आपस में बाँध दें।

- सितम्बर माह में आमने-सामने की पंक्तियों के गन्ना थानों की आपस में कैंचीनुमा बंधाई करें।
- अगस्त-सितम्बर माह में गन्ने की निचली सूखी पत्तियों को निकाल दें।
- उपयुक्त समय पर ज़मीन की सतह से गन्ने को काटें जिससे उपज का नुकसान न हो और आगे आने वाली पेड़ी भी अच्छी हो।

सूखी पत्ती बिछाने के लाभ

- गन्ने की सूखी पत्तियाँ बिछाने की जगह पर पानी का वाष्पीकरण कम होता है जिससे 35 से 40 प्रतिशत सिंचाई जल की बचत होती है।
- गर्मी में मृदा का तापक्रम कम रहता है और सर्दी में मृदा का तापक्रम अधिक रहता है। साथ ही मृदा में पर्याप्त मात्रा में नमी अधिक समय तक बनी रहती है जिससे मृदा में पाये जाने वाले लाभदायक सूक्ष्म जीवों की क्रियाशीलता से पौधों को नाइट्रोजन और फॉस्फोरस की उपलब्धता बढ़ जाती है।
- गन्ने की आँख के फुटाव में तेजी आ जाती है और किल्लों का मरना कम हो जाता है।
- खरपतवारों का प्रकोप कम होता है।
- पत्तियाँ सड़ने के बाद मिट्टी में कार्बनिक पदार्थों की मात्रा और मिट्टी की उर्वराशक्ति बढ़ जाती है।

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

निदेशक

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान

पो. आ. : दिलकुशा, लखनऊ

फोन : 0522-2480726

ई-मेल : iisrlko@sancharnet.in, फैक्स नं. : 0522-2480738

army printing press

www.armyprintingpress.com

Lucknow (0522) 6565333